

दशाभ्यां स्वसदशे (स्व auf सदशाभ्याम् zu beziehen) मुते त्वं दातुमर्हसि R. GORR. 1,72,34. पौराणानां नृपरत्तानामेतत्स्वसदशं वचः 2,121,4. स्वसदश-मुवाच 5,68,32. RĀGA-TAR. 3,438.

स्वसमान adj. dass.: अर्थितेन स्वयं त्रातु विक्रमादित्यभूभुजा । निर्दिष्टः स्वसमानस्त्वं (स्व auf विक्रमादित्य zu beziehen) शाधि नः पृथिवीमिमाम् RĀGA-TAR. 3,242.

स्वसमुत्थ adj. 1) im Selbst entstehend, — entstanden: पथेयः स्वसमुत्थेन (स्व auf एयः zu beziehen) वक्रिना नाशमृच्छति Spr. (II) 5164. — 2) durch sich selbst entstanden, — seiend so v. a. natürlich: चतुर्णामथ दुर्गाणां स्वसमुत्थानि त्रीणि तु । चतुर्थं कृत्रिमं दुर्गम् MĀRK. P. 49,41.

स्वसंभव adj. aus dem Selbst (auf das grammatische Subject zu beziehen) entstanden BHĀG. P. 3,28,40.

स्वसंभूत adj. aus sich selbst entstanden KATHĀS. 53,167.

स्वसंमुख adj. zu sich selbst gekehrt: कौरौ Verz. d. Oxf. H. 202,b,30.

स्वसंस्वर ŪRĀDIS. 2,97. ÇĀNT. 2,9. f. Declination P. 6,4,11. VOP. 3,66. Schwester AK. 2,6,1,29. H. 553. 9. HALĀJ. 2,352. bildlich von zusammengehörigen (weiblich benannten) Sachen. RV. 1,62,10. 64,7. 71,1. देवानाम् 2,32,6. आदित्यानाम् 8,90,15. स्वसुर्जारः 6,53,4. 5. 10,108,9. AV. 1,28,4. 3,30,3. VS. 3,57. ÇAT. BR. 1,7,4,2. 2,6,2,9. AIT. BR. 3,37. sieben RV. 1,191,14. 10,3,5. VĀLAKH. 11,4. dreissig (die Tage) TS. 4,3,44,2. fünf (die Jahreszeiten) ebend. zehn (die Finger) NAIGH. 2,5. RV. 3,1,3. 11. 29,13. 4,6,8. 9,1,7. 65,1. 71,5. 91,1. Morgen und Nacht 1,113,3. 124,8. 183,5. 4,52,1. 10,127,3. Gewässer 3,33,9. 4,22,7. 6,61,9. 9,82,3. Sonnenrosse 1,164,3. 7,66,15. von Thieren ÇĀNKH. ÇA. 15,17,17. — M. 2,50.133. MBH. 1,5905.6201. R. 1,54,9. Spr. (II) 4809. 7341. KATHĀS. 39,103. BHĀG. P. 1,14,27. 4,3,10. स्वसृष्ट WEBER, RĀMAT. UP. 336. — Vgl. पितुःस्वसृष्ट, पितृ०, मातुः०, मातृ०, यम०, शमन०, सप्त०, कृत०. स्वसृष्ट (स्व + सृष्ट, im Padap. ohne Avagraha) n. 1) Hürde, Stall; = गृह NAIGH. 3,4. RV. 1,3,8. वत्सं न स्वसृष्टेषु धेनुवः 2,2,2. 34,8. 5,62,2. 8,77,1. SV. I, 5,2,2,2; vgl. AV. 7,22,2. — 2) gewohnter Ort, Wohnplatz, Wohnung: इमानि तुभ्यं स्वसृष्टाणि येमिरे RV. 3,60,6. ०रस्य पत्नी Hausherrin 61,4. पतिः ÇAT. BR. 4,3,5,20. पुत्रो रथः प्रति स्वसृष्ट-मुषं याति पीतये RV. 6,68,10. 8,88,1. 1,34,7. Nistplatz der Vögel 2,19,2. 34,5. — 3) angeblich Tag NAIGH. 1,9. 4,2. NIR. 5,4.

स्वसर्व n. = सर्वस्व die ganze Habe Verz. d. Oxf. H. 128,b,19. 22.

स्वसा f. = स्वसृष्ट Schwester: शक्तिं मृत्योर्धोरामिव स्वसाम् MBH. 6,5380. R. 7,12,2.

स्वसिञ्च adj. von selbst ausgiessend VS. 10,19; vgl. jedoch AV. 12,2,41.

स्वसित (6. सु + श्र) adj. ganz schwarz: स्वसितापतलोचना MBH. 1,6524.

स्वसिद्ध adj. 1) von selbst zu Stande gekommen, — kommend BHĀG. P. 7,6,25. — 2) von Natur eigen: बाह्वि स्वसिद्धे क्षुपबर्हृषीः किम् Spr. (II) 6738.

स्वसूत adj. den eigenen Weg gehend RV. 1,64,11. 87,4.

स्वसृष्ट (von स्वसृष्ट) n. Schwesterschaft RV. 10,168,10.

स्वसृष्टे adj. seinen eigenen Damm oder Brücke bildend: अष्टसृष्टेः स्वसृष्टेः RV. 10,61,16. वामापः परिसृष्टः परिं यत्ति स्वसृष्टेः 8,39,10.

स्वस्तर्क (6. सु + श्र) adj. ein gutes Heimwesen habend AV. 14,1,22. 2,64.

स्वस्तार m. eine selbstbereitete Stroh (zum Sitzen oder Liegen) ĀÇV.

GRH. 2,3,7. GOBH. 3,9,11. 15. 4,2,17. 4,7. — Vgl. स्वास्तर.

स्वस्ति (6. सु + 2. अस्ति) ŪRĀDIS. 4,180. 1) f. instr. स्वस्ति, später auch स्वस्त्या VS. 13,19. Wohlsein, Glück, Gelingen RV. 1,35,1. (अच्छे) वृष्ट्यानी स्वस्तये 2,32,8. 3,10,8. 4,31,11. आर्भञ्जद्वीतिद्वैत्रं स्वस्ती 2,38,1. देवी स्वस्तिः परिं णः स्यात् 3,38,9. ÇAT. BR. 1,9,1,27. RV. 6,22,10. 36,6. 37,6. उरुघा स्वस्तये 8,31,11. पृथ्या 10,59,7. ÇAT. BR. 3,2,8,8. 4,5,1,3. AV. 12,2,11. 18,4,30. VS. 11,69. ÇAT. BR. 1,8,2,21. 6,6,1,1. स नो नेषि गोभिः सं सूरिभिः सं स्वस्ति RV. 5,42,4. पूषायाया समिषा सं स्वस्ति 6,20,6. स्वस्तिभिस् als adv. so v. a. glücklich 1,189,2. 5,53,14. 7,1,20. — गच्छेयं स्वस्तिम् R. 4,10,33. आत्मविद्वयस्वस्तये स्वास्तिरस्तु मे BHĀG. P. 4,24,33. सकललोकस्वस्तये 5,20,40. 22,3. शास्तिस्वस्तिपरिषया MBH. 1,1334. am Ende eines adj. comp.: कृतस्वस्ति-रकिंचना 14,2016. Personificirt als Göttin RV. 4,35,3. ०देवी Verz. d. Oxf. H. 23,b,4. als Kalā Wilson, Sel. Works 1,246. — 2) स्वस्ति adv. (instr.) gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. wohl, glücklich, mit Erfolg: पार्या तुर्वशी स्वस्ति RV. 1,174,9. यष्टा देवान्स्वस्ति 2,9,6. तमिदं स्वस्ति ऊवे 38,9. 3,33,20. रयिं नशते स्वस्ति 5,4,11. AV. 1,30,2. 4,14,5. 13,2,5. VS. 4,33. न हैनं ते स्वस्ति समंभुवते TBa. 1,2,2,5. स्वस्ति ज्ञानतामियाम् TS. 2,3,4,2. AIT. BR. 2,7,4,14. स्वस्ति प्रबुध्यामहे ÇAT. BR. 3,2,2,22. गच्छ MBH. 3,15799. आगमत् 5,711. व्रजत 14,710. स्वस्ति प्राप्नुहि कौ-त्तये काम्यकं पुनराश्रमम् 3,11930. स्वस्ति देवि तरामि वाम् R. 2,55,19. स्वस्ति (so trennen wir) कृतं ऊतं च 109,34. न स्वस्ति यास्यसि BHĀG. P. 3,18,3. कश्चित्स्वस्त्यास्ते 1,14,26. 33. 3,1,32. समासीनः 28,8. चरति 1,35. — 3) hieraus entspringt ein scheinbares indecl. neutrum, das als nom. und acc. gefasst werden kann. Wohlergehen, Heil, Glück AK. 3,4,29 (20), 3. TRIK. 3,4,3. H. an. 7,26. MED. avj. 27. HALĀJ. 5,101. mit dat. (gen.) P. 2,3,16. VOP. 5,16. स्वस्ति न इन्द्रः RV. 1,89,5. स्वस्ति भूमे नो भव AV. 12,1,32 (ähnlich aber auch वेदः स्वस्तिः 7,28,1. TS. 3,2,4,1). स्वस्ति नो अर्भयं च नः 11,2,31. श्योतिर्भयं स्वस्ति RV. 6,47,8. कश्चिन्मधुवने स्वस्ति R. 5,63,3. स्यात्स्वस्ति किं कापयतः BHĀG. P. 4,5,11. कथं स्यात्स्वस्ति देहिनाम् 14,9. स्वस्ति चास्मानु देवतः so v. a. wir sind wohl auf MRĀKH. 144,15. स्वस्ति पित्रे नो अस्तु bene sit AV. 1,31,4. स्वस्ति नः पथि स्यात् ÇĀNKH. ÇA. 6,13,2. GOBH. 3,8,8. स्वस्ति ते ऽस्तु KATHOP. 1,9. MBH. 5,7282. R. 1,17,31. 28,13. R. GORR. 1,4,98. 3,51,37. 64,4. 7,10,39. RAGH. 5,17. Spr. (II) 7330. VARĀH. BḤH. S. 43,18. KATHĀS. 22,33. BHĀG. P. 3,13,9. 5,8,11. 18,9. स्वस्त्यस्तु सर्वभूतेषु MĀRK. P. 118,13. अपि स्वस्ति भवेत्तात सर्वेषां भुवि रत्नसाम् R. 3,41,4. स्वस्ति भूतेभ्यः MBH. 3,12238. R. 3,41,7. MRĀKH. 65,15. 144,22. ÇĀK. 28,9. 64,11, v. l. VIKR. 87,19. VARĀH. BḤH. S. 43,17. BĀLAR. 160,3. RĀGA-TAR. 1,145. 4,77. BHĀG. P. 6,14,17. स्वस्ति केचित्थावदन् Glück auf! R. 1,4,21. BHĀG. 11,21. स्वस्ति स्वस्ति Spr. (II) 1631. am Anfange eines Briefes PRAB. 33,4. ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् AV. PARIC. in Ind. St. 9,19. ब्राह्मणान्स्वस्तिवाच्य GOBH. 3,9,4. ÇĀNKH. GRHJ. 1,25. SHADY. BR. 3,10. MBH. 15,51. R. 6,31,25. आचार्यं स्व० ÇĀNKH. GRHJ. 2,8. 4,5. द्विजाती-न्वाच्य पुण्याहं स्वस्ति चैव MBH. 5,7100. स्वस्तिवाचित (ब्राह्मण) 3,13313. स्वस्ति पूषा अस्तुरो दद्यात नः RV. 5,51,12. 10,7,1. स्वस्ति चा-स्मा अनर्माव च धेहि 14,11. स्वस्ति संविता नः कृषोतु AV. 6,40,2. 8,2,11. MBH. 3,2519. R. 2,25,8. 9 (21. fg. GORR.). MRĀKH. 114,4. 129,16.